अमेरिकी मांओं की पुकार

❑ राजाराम भादू

बात करना भूलने वाले बच्चे
सिर्फ चीख सकते हैं
घरों के आंगनों में हंसी नहीं
कभी धमकते बूट हैं, कभी नकाबपोश
इंसान क्या होता है ?
यह बताने के लिए पिछले जमाने की तारीख पढ़ानी होगी
दशहतों के नगर में तो नींद नहीं आती है
भला ख्वाब कैसे आयेंगे ? -किश्वर नाहीद

अमेरिकी माताओं ने अमेरिका में बन्दूक-संस्कृति के प्रचार-प्रसार पर काबू पाने की मांग करते हुए 15 मई, 2000 को मिलेनियम माम मार्च (दस लाख मम्मियों की रैली) का आयोजन किया । इस रैली में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगभग साढ़े सात लाख थी । रैली निकालने के लिए ये महिलाएं संसद भवन से कुछ दूर जमा हुई थीं । इन महिलाओं ने बंदूक के पंजीकरण, बाल सुरक्षा 'लाक' (ताला) और बंदूक से सुरक्षा के अन्य कानून लागू करने की मांग की । अमेरिका के 65 शहरों में इस तरह की रैली निकाली गयीं । सख्त कानून के अभाव में हर साल अमेरिका में लगभग 30 हजार लोगों की मौत हो रही है । इनमें से लगभग चार हजार उन्नीस साल से कम आयु के बच्चे व किशोर होते हैं ।

'मदर्स डे' के मौके पर आयोजित इन रैलियों में माताओं, चाचियों, मौसियों, बहनों, दादियों, नानियों, बच्चों और कुछ इलाकों में पिताओं ने भी भाग लिया । रैली में शामिल महिलाओं के हाथ में बैनर थे, जिन पर लिखा था - 'बच्चे बूलेट प्रूफ नहीं है', बंदूक नहीं मरती लोग मरते हैं। एक ताजा सर्वेक्षण के मुताबिक हर चार में से एक अमेरिकी का कहना था कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से मारने की धमकी दी गयी या उन पर गोली चलायी गयी । सर्वेक्षण से पता चला कि अमेरिकी नागरिकों को बंदूक के दुरूपयोग से काफी खतरा है । अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की पत्नी हिलेरी ने इस रैली में भाग लिया। इन्होंने देश में 'बन्दूक संस्कृति' पर नियंत्रण के लिए सख्त कानून बनाने की 'अमेरिकी माताओं की मांग का समर्थन किया। हिलेरी के अनुसार इस सिलसिले में सख्त कानून बनाने का विरोध करने वाले लोग ताकत, पैसे और भय के तर्कों को अपना आधार बना रहे हैं । उन्होंने रैली में शामिल होने वाली महिलाओं को अपने संदेश में कहा, 'अंततः उन्होनें यह साबित कर दिया कि अमेरिकी संविधान इसलिए काम कर रहा है क्योंकि भले लोग गलत काम के खिलाफ आवाज बुलंद करने का साहस करते हैं । मदर्स डे का संदेश काफी सरल और सहज है । मां फूल और गहने नहीं चाहती । मां कोई और ऐशोआराम भी नहीं चाहती । मां सिर्फ यह चाहती है और मांग करती है कि संसद उनके बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए सही काम करे ।'

लेकिन 'सैकेंड अमेंडमेंट सिस्टर्स - आर्म्ड इंफॉर्म्ड मदर्स' नामक एक संगठन ने जबाबी रैली का आयोजन किया । इसके पीछे 'गन लाबी' के मुख्य संगठन नेशनल रायफल एसोसियेशन की भूमिका थी । पिछले चौदह महीनों में इसकी सदस्य संख्या 30 लाख है । इसके सदस्यों ने कई स्थानों पर

माताओं के मार्च के विरुद्ध प्रदर्शन किए । लेकिन सख्त कानून बनाने की मांग करने वाली रैली के समक्ष यह रैली मामूली साबित हुई ।
बन्दूकों के आसानी से उपलब्ध होने के कारण अमेरिकी स्कूलों में दिल दहला देने वाले हत्याकाण्ड हुए हैं। वर्ष 1994 और 1997 के बीच 4223 बच्चों की मौतें बंदूकों से हुई थीं । इन्हीं घटनाओं ने माताओं को इस मुद्दे पर पहल करने को मजबूर किया।

काठमांडू में 19 मई 2000 को सम्पन्न एशिया प्रशांत क्षेत्र के सम्मेलन में तमाम देशों की सरकारों और लोगों से अपील की गई कि वे बच्चों का इस्तेमाल युद्ध में न करें । बच्चों के युद्ध में इस्तेमाल पर रोक के लिए विचार हेतु प्रशांत क्षेत्रीय देशों का यह पहला सम्मेलन था जिसमें करीब 20 देशों के सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बच्चों के बतौर सैनिक इस्तेमाल पर रोक के लिए जारी बयान में उन सभी देशों से हल्के हथियारों की सप्लाई नियंत्रित करने के लिए कहा गया जिनमें बच्चे हथियारों का इस्तेमाल करते हैं । ऐसे सम्मेलन इससे पहले अफ्रीका, लातीनी अमेरिका और यूरोप में भी हो चुके हैं ।
सम्मेलन के उपरान्त जारी काठमांडू घोषणा में युद्धरत देशों से अपील की गयी कि वे अपने विवादों का हल शांतिपूर्ण तरीकों से निकालें । साथ ही सुनिश्चित करें कि 18 साल से कम उम्र के बच्चों को युद्ध के किसी काम में इस्तेमाल नहीं किया जाये । हालांकि घोषणा में बच्चों को युद्ध में झोंकने वाले किसी देश का नाम नहीं लिया गया। इसमें सरकारों, संयुक्त राष्ट्र संघ और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से ऐसे विकल्प ढूंढ़ने के लिए कहा गया जिससे बच्चों को रोजगार दिलाया जा सके और उनका पुनर्वास हो सके ।

इन दिनों यह प्रवृत्ति भी जोर पकड़ती जा रही है कि किसी ज्वलंत अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे से लेकर स्थानीय स्तर की किसी समस्या तक विरोध-प्रदर्शन व बंद के आयोजनों या धरने वगैरह में बच्चों को विभिन्न तख्तियां बैनर लेकर आगे कर दिया जाता है । भले ही बच्चों को इन मुद्दों और समस्याओं की वास्तविक जानकारी ही नहीं हो । यह भी बच्चों का इस्तेमाल ही है, भले ही यह उस तरह हिंसक न हो । दरअसल ये उदाहरण बताते हैं कि हम बच्चों की दुनिया में किस तरह हस्तक्षेप कर रहे हैं और इन्हें कितनी गैर-संजीदगी से लेते हैं । इधर ऐसे सजावटी प्रदर्शनों की भरमार है जिनमें कहीं बच्चे नशा विरोधी पोस्टर लिये दिख रहे हैं तो कहीं तख्तियां लिये कुछ और मांग कर रहे हैं । मगर यह काम वे अपनी मर्जी से नहीं करते, दूसरों की थोपी हुई इच्छा से करते हैं और स्वाभाविक ही है कि इससे वे बहुत खुश भी नहीं होते होंगे ।
हमारी सभ्यता में, हमारी लड़ाइयों में, हमारे विकास में बच्चे किस तरह जोते जा रहे हैं, इसकी एक नहीं अनेक मिसालें हैं । औद्योगीकरण ने उन्हें कारखानों में लगाया तो विपन्नता ने उन्हें ढाबों पर धकेल दिया। आधुनिक युद्धों और आतंक-आधारित हिंसा ने उन्हें बन्दूक उठाने के लिए विवश किया है । सियरा लियोन में संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी शांति सेनाएं भेजी थीं, वहां उन्हें बंदूके लिए मोर्चा जमाये बच्चों और किशोरों से जूझना पड़ा था और बच्चों को अपने मकसद के प्रति ज्यादा ईमादार और जुनून का ज्यादा पक्का पाया था । अफ्रीका और एशिया में सक्रिय विभिन्न आतंकवादी संगठनों में लड़कों की ही नहीं बल्कि लड़कियों की भर्ती भी बढ़ती जा रही है । इनके कच्चे दिमागों में कोई मकसद ठूंसना आसान काम है । बेशक, गरीब बच्चे ही इस हिंसक दायरे में नहीं फंसे हैं, सम्पन्न घरों के बच्चे भी हिंसक वृत्ति की परिधि से परे नहीं है । तथाकथित विकसित जनतांत्रिक और अत्याधुनिक समाजों में बच्चे किस कदर हिंसक घटनाओं के शिकार हो रहे हैं, इस त्रासदी की प्रतिध्वनि को हम अमेरिकी मांओं की पुकार में सुन सकते हैं ।◆